



وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ٥ وَلَا تَسْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ٦ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ٧ فَإِذَا نَقَرْنَا

और बुतों से दूर रहो और ज़ियादा लेने की नियत से किसी पर एहसान न करो<sup>7</sup> और अपने रब के लिये सब्र किये रहो<sup>8</sup> फिर जब सूरे

فِي النَّاقُورِ ٨ فَذَلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ٩ عَلَى الْكٰفِرِينَ غَيْرُ

फूँका जाएगा<sup>9</sup> तो वोह दिन कर्ना (सख्त) दिन है काफ़िरोँ पर आसान

يَسِيرٌ ١٠ ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ١١ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّهِدُودًا ١٢

नहीं<sup>10</sup> उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैं ने अकेला पैदा किया<sup>11</sup> और उसे वसीअ़ माल दिया<sup>12</sup>

وَبَيْنَيْنَ شُهُودًا ١٣ وَمَهَّدْتُ لَهُ تَهْيِيدًا ١٤ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ١٥

और बेटे दिये सामने हाज़िर रहते<sup>13</sup> और मैं ने उस के लिये तरह तरह की तय्यारियाँ कीं<sup>14</sup> फिर येह तमअ़ करता है कि मैं और ज़ियादा दूँ<sup>15</sup>

كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ١٦ سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ١٧ إِنَّهُ فَكَّرُو

हरगिज़ नहीं<sup>16</sup> वोह तो मेरी आयतों से इनाद रखता है करीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सज़द पर चढ़ाऊँ बेशक वोह सोचा और

قَدَرَ ١٨ فَقَتِلْ كَيْفَ قَدَرَ ١٩ ثُمَّ قَتِلْ كَيْفَ قَدَرَ ٢٠ ثُمَّ نَظَرَ ٢١

दिल में कुछ बात ठहराई तो उस पर ला'नत हो कैसी ठहराई फिर उस पर ला'नत हो कैसी ठहराई फिर नज़र उठा कर देखा

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ٢٢ ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ٢٣ فَقَالَ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ

फिर तेवरी चढ़ाई (माथे पर बल डाले) और मुंह बिगाड़ा फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया फिर बोला येह तो वोही जादू है अगलों

يُؤْتَرُ ٢٤ إِنْ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ٢٥ سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ٢٦ وَمَا

से सीखा येह नहीं मगर आदमी का कलाम<sup>17</sup> कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूँ और

7 : या'नी जैसे कि दुन्या में हृदिये और न्योते (शादी वगैरा में रकम या दूसरे तहाइफ़) देने का दस्तूर है कि देने वाला येह खयाल करता है

سَلَّمَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ कि जिस को मैं ने दिया है वोह इस से ज़ियादा मुझे दे देगा, इस किस्म के न्योते और हृदिये शरअ़न जाइज़ हैं मगर नबिय्ये करीम

को इस से मन्अ़ फ़रमाया गया क्यूँ कि शाने नुबुव्वत बहुत अरफ़ओ आ'ला है और इस मन्सबे आली के लाइक़ येही है कि जिस को जो दें

वोह महज़ करम हो, उस से लेने या नफ़अ़ हासिल करने की नियत न हो। 8 : अवामिर व नवाही और उन ईज़ाओं पर जो दीन की खातिर

आप को बरदाश्त करनी पड़ी। 9 : मुराद इस से बकौले सहीह नफ़ख़ए सानिया है। 10 : इस में इशारा है कि वोह दिन ब फ़रजे इलाही

मोमिनीन पर आसान होगा। 11 : उस की मां के पेट में बिगैर माल व औलाद के। शाने नुज़ूल : येह आयत वलीद बिन मुगीरा मख़ज़ूमि के

हक़ में नाज़िल हुई, वोह अपनी क़ौम में वहीद के लक़ब से मुलक़क़ब था। 12 : खेतियाँ और कसीर मवेशी और तिजारतें। मुजाहिद से मन्कूल

है कि वोह एक लाख दीनार नक़द की हैसियत रखता था और ताइफ़ में इस का ऐसा बड़ा बाग़ था जो साल के किसी वक़्त फ़लों से ख़ाली

न होता था। 13 : जिन की ता'दाद दस थी और चूँ कि मालदार थे उन्हें कस्बे मअ़ाश के लिये सफ़र की हाज़त न थी, इस लिये सब बाप

के सामने रहते, उन में से तीन मुशररफ़ ब इस्लाम हुए ख़ालिद और हिशाम और वलीद इब्ने वलीद। 14 : जाह भी दिया और रियासत भी अत्ता

फ़रमाई, ऐश भी दिया और तूले उम्र भी 15 : बा वुजूद नाशक़ी के 16 : येह न होगा, चुनान्चे, इस आयत के नुज़ूल के बा'द वलीद के माल

व औलाद व जाह में कमी शुरूअ़ हुई यहाँ तक कि हलाक हो गया। 17 शाने नुज़ूल : जब "حَمَّ تَنْزِيلَ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ" नाज़िल

हुई और सय्यदे आलम सَلَّمَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने मस्जिद में तिलावत फ़रमाई, वलीद ने सुना और उस क़ौम की मजलिस में आ कर उस ने कहा

أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٤﴾ لَا تَبْقَى وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا

तुम ने क्या जाना दोज़ख़ क्या है न छोड़े न लगी रखे<sup>18</sup> आदमी की खाल उतार लेती है<sup>19</sup> उस पर

تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً صَّ وَ مَا جَعَلْنَا

उन्नीस दारोगा हैं<sup>20</sup> और हम ने दोज़ख़ के दारोगा न किये मगर फिरिश्ते और हम ने

عَدَّتْهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۗ لَيْسَتِ يَقِينِ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَ

उन की यह गिनती न रखी मगर काफ़िरों की जांच को<sup>21</sup> इस लिये कि किताब वालों को यकीन आए<sup>22</sup> और

يَزِدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۗ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

ईमान वालों का ईमान बढ़े<sup>23</sup> और किताब वालों और मुसलमानों को कोई

وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ

शक न रहे और दिल के रोगी<sup>24</sup> और काफ़िर कहे

مَا ذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي

इस अचान्ने (तअज़्जुब) की बात में **اللّٰهُ** का क्या मतलब है यूंही **اللّٰهُ** गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है

कि खुदा की कसम मैं ने मुहम्मद **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से अभी एक कलाम सुना न वोह आदमी का न जिन का, बखुदा उस में अज़ीब शीरीनी और ताज़गी और फ़वाइद व दिलकशी है, वोह कलाम सब पर ग़ालिब रहेगा। कुरैश को उस की इन बातों से बहुत ग़म हुआ और उन में मशहूर हो गया कि वलीद आबाई दीन से बरग़स्ता हो गया (फिर गया), अबू जहल ने वलीद को हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उस के पास आ कर बहुत ग़मज़दा सूरत बना कर बैठ गया, वलीद ने कहा : क्या ग़म है ? अबू जहल ने कहा : ग़म कैसे न हो तू बूढ़ा हो गया है, कुरैश तेरे खर्च के लिये रुपिया जम्अ कर देंगे, उन्हें खयाल है कि तू ने मुहम्मद (मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) के कलाम की ता'रीफ़ इस लिये की है कि तुझे उन के दस्तर ख़ान का बचा खाना मिल जाए, इस पर उसे बहुत तैश आया और कहने लगा कि क्या कुरैश को मेरे मालो दौलत का हाल मा'लूम नहीं है और क्या मुहम्मद (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) और उन के अस्थाब ने कभी सेर हो कर खाना भी खाया है ? उन के दस्तर ख़ान पर क्या बचेगा ? फिर अबू जहल के साथ उठा और क़ौम में आ कर कहने लगा तुम्हारा खयाल है कि मुहम्मद (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) मज्नून हैं क्या तुम ने उन में कभी दीवानगी की कोई बात देखी ? सब ने कहा : हरगिज़ नहीं, कहने लगा : तुम उन्हें काहिन समझते हो, क्या तुम ने उन्हें कभी कहानत करते देखा है ? सब ने कहा : नहीं, कहा : तुम उन्हें शाइर गुमान करते हो, क्या तुम ने कभी उन्हें शे'र कहते पाया ? सब ने कहा : नहीं, कहने लगा : तुम उन्हें कज़़ाब कहते हो, क्या तुम्हारे तजरिबे में कभी उन्होंने ने झूट बोला ? सब ने कहा : नहीं और कुरैश में आप का सिद्क व दियातन ऐसा मशहूर था कि कुरैश आप को अमीन कहा करते थे, येह सुन कर कुरैश ने कहा फिर बात क्या है ? तो वलीद सोच कर बोला कि बात येह है कि वोह जादूगर हैं, तुम ने देखा होगा कि उन की बदीलत रिश्तेदार रिश्तेदार से बाप बेटे से जुदा हो जाते हैं, बस येही जादूगर का काम है और जो कुरआन वोह पढ़ते हैं वोह दिल में असर कर जाता है इस का बाइस येह है कि वोह जादू है, इस आयते करीमा में इस का ज़िक्र फ़रमाया गया। 18 : या'नी न किसी मुस्तहिक्के अज़ाब को छोड़े न किसी के जिस्म पर गोश्त पोस्त खाल लगी रहने दे बल्कि मुस्तहिक्के अज़ाब को गिरिफ़्तार करे और गिरिफ़्तार को जलाए और जब जल जाएं फिर वैसे ही कर दिये जाएं। 19 : जला कर। 20 : फिरिश्ते। एक मालिक और अन्नरह उन के साथी। 21 : कि हिक्मते इलाही पर ए'तिमाद न कर के इस ता'दाद में कलाम करें और कहे उन्नीस क्यूं हुए ? 22 : या'नी यहूद को येह ता'दाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देख कर सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के सिद्क का यकीन हासिल हो 23 : या'नी अहले किताब में से जो ईमान लाए उन का ए'तिकाद सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के साथ और जियादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वह्ये इलाही है इस लिये कुतुबे साबिक़्ा से मुताबिक़ होती है 24 : जिन के दिलों में निफ़ाक़ है।

مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۗ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ

जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता और वोह<sup>25</sup> तो नहीं मगर आदमी

لِلْبَشَرِ ۚ كَلَّا وَالْقَمَرَ ۚ وَاللَّيْلَ إِذَا دَبَّرَ ۚ وَالصُّبْحَ إِذَا أَسْفَرَ ۚ

के लिये नसीहत हां हां चांद की कसम और रात की जब पीठ फेरे और सुबह की जब उजाला डाले<sup>26</sup>

إِنهَا لِأَحَدَى الْكُبَرِ ۚ نَزِيرٌ لِلْبَشَرِ ۚ لَسَنُ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ

बेशक दो जख बहुत बड़ी चीजों में की एक है आदमियों को डराओ उसे जो तुम में चाहे कि

يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۚ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَاهِيَةٌ ۚ إِلَّا الْأَصْحَابَ

आगे आए<sup>27</sup> या पीछे रहे<sup>28</sup> हर जान अपनी करनी में गिरवी है मगर दहनी

الْيَبِينِ ۚ فِي جَنَّتِ يُتَسَاءَلُونَ ۚ عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۚ مَا سَأَلَكُمْ

तरफ वाले<sup>29</sup> बागों में पूछते हैं मुजरिमों से तुम्हें क्या बात दो जख

فِي سَقَرٍ ۚ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصَلِينَ ۚ وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْبُسْكِينِ ۚ

में ले गई वोह बोले हम<sup>30</sup> नमाज न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे<sup>31</sup>

وَكُنَّا نَحُوضُ مَعَ الْخَاطِئِينَ ۚ وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ۚ

और बेहूदा फिर वालों के साथ बेहूदा फिर करते थे और हम इन्साफ के दिन को<sup>32</sup> झुटलाते रहे

حَتَّىٰ آتَيْنَا الْيَقِينَ ۚ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّفَاعِينَ ۚ فَمَا لَهُمْ

यहां तक कि हमें मौत आई तो उन्हें सिफारिशियों की सिफारिश काम न देगी<sup>33</sup> तो उन्हें क्या हुवा

عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۚ كَانَهُمْ حُرٌّ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۚ فَرَّتْ مِنْ

नसीहत से मुंह फेरते हैं<sup>34</sup> गोया वोह भड़के हुए गधे हों कि शेर से

قَسْوَرَةٍ ۚ بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِيٍّ مِنْهُمْ أَنْ يُوْتَىٰ صُحُفًا مُّنشَرَةً ۚ

भागें हों<sup>35</sup> बल्कि उन में का हर शख्स चाहता है कि खुले सहीफे उस के हाथ में दे दिये जाए<sup>36</sup>

25 : या'नी जहन्नम और उस की सिफत या आयाते कुरआन 26 : खूब रोशन हो जाए 27 : खैर या जन्नत की तरफ ईमान ला कर 28 : कुफ़ इख़्तियार कर के और बुराई व अज़ाब में गिरिफ़्तार हो । 29 : या'नी मोमिनीन, वोह गिरवी नहीं, वोह नजात पाने वाले हैं और उन्हीं ने नेकियां कर के अपने आप को आजाद करा लिया है, वोह अपने रब की रहमत से मुन्तफ़अ हैं । 30 : दुन्या में 31 : या'नी मसाकीन पर सदका न करते थे 32 : जिस में आ'माल का हिसाब होगा और जज़ा दी, जाएगी मुराद इस से रोजे कियामत है 33 : या'नी अम्बिया, मलाएका, शुहदा

كَلَّا ۖ بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۗ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكَّرَةٌ ۗ فَمِنْ شَاءِ

हरगिज़ नहीं बल्कि उन को आखिरत का डर नहीं<sup>37</sup> हां हां बेशक वोह<sup>38</sup> नसीहत है तो जो चाहे

ذِكْرَةٌ ۗ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ

उस से नसीहत ले और वोह क्या नसीहत मानें मगर जब **अल्लाह** चाहे वोही है डरने के लाइक

وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۗ

और उसी की शान है मग़िफ़त फ़रमाना

﴿٢٠﴾ آيَاتُهَا ٢٠ ﴿٢١﴾ سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ ٣١ ﴿٢٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢

सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में चालीस आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**अल्लाह** के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला<sup>1</sup>

لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ۗ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۗ أَيَحْسَبُ

रोजे क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूं और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे<sup>2</sup> क्या आदमी<sup>3</sup>

الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعُ عِظَامَهُ ۗ بَلَىٰ قَدِيرِينَ ۗ عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ۗ

येह समझता है कि हम हरगिज़ उस की हड्डियां जम्अ न फ़रमाएंगे क्यूं नहीं हम क़ादिर हैं कि उस के पोर ठीक बना दें<sup>4</sup>

सालिहीन जिन्हें **अल्लाह** तआला ने शफ़अ किया है वोह ईमानदारों की शफ़अत करेंगे काफ़ि़रों की शफ़अत न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़अत भी मुयस्सर न आएगी। 34 : या'नी मवाइज़े कुरआन से ए'राज़ करते हैं। 35 : या'नी मुशिरकीन नादानी व बे वुकूफ़ी में गधे की मिस्ल हैं जिस तरह शेर को देख कर वोह भागता है इसी तरह येह नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तिलावते कुरआन सुन कर भागते हैं 36 : कुफ़ारे कुरैश ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा था कि हम हरगिज़ आप की इत्तिबाअ न करेंगे जब तक कि हम में से हर एक के पास **अल्लाह** तआला की तरफ़ से एक एक किताब न आए जिस में लिखा हो कि येह **अल्लाह** तआला की किताब है फुलां बिन फुलां के नाम, हम इस में तुम्हें रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के इत्तिबाअ का हुक्म देते हैं। 37 : क्यूं कि अगर उन्हें आखिरत का खौफ़ होता तो अदिल्ला काइम होने और मो'जिज़ात जाहिर होने के बा'द इस किस्म की सर्कशाना हीला बाजियां न करते। 38 : कुरआन शरीफ़ 1 : सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में दो 2 रूकूअ, चालीस 40 आयतें, एक सो निनानवे 199 कलिमे, छ<sup>6</sup> सो बानवे 692 हर्फ़ हैं। 2 : बा वजूद मुत्तकी व कसीरुत्ताअत होने के कि तुम मरने के बा'द ज़रूर उठाए जाओगे। 3 : यहां आदमी से मुराद काफ़िर मुन्किरे बअस है। शाने नुज़ूल : येह आयत अदी बिन रबीआ के हक़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा था कि अगर मैं क़ियामत का दिन देख भी लूं जब भी न मानूं और आप पर ईमान न लाऊं, क्या **अल्लाह** तआला बिखरी हुई हड्डियां जम्अ कर देगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिस के मा'ना येह हैं कि क्या इस काफ़िर का येह गुमान है कि हड्डियां बिखरने और गलने और रेजा रेजा हो कर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ मकामात में मुन्तशिर हो जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उन का जम्अ करना काफ़िर हमारी कुदरत से बाहर समझता है, येह ख़याले फ़ासिद उस के दिल में क्यूं आया और उस ने क्यूं नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वोह मरने के बा'द दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। 4 : या'नी उस की उंगलियां जैसी थीं बिगैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दें और उन की हड्डियां उन के मौक़अ पर पहुंचा दें, जब छोटी छोटी हड्डियां इस तरह तरतीब दे दी जाएं तो बड़ी का क्या कहना।